श्री अरुण सिंह रावत, भा.व.से., महानिदेशक, भा.वा.अ.एवं शि.प. की हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला एवं इसके क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों की यात्रा पर रिपोर्ट

Report on Visit of Sh. Arun Singh Rawat, IFS, Director General, ICFRE, Dehradun to Himalayan Forest Research Institute Shimla and its Field Research Stations

(From 17.06.2023 to 22.06.2023)

Shri Arun Singh Rawat, IFS, Director General, Indian Council of Forestry Research & Education, Dehradun was on a visit to ICFRE- Himalayan Forest Research Institute Shimla and its Field Research Stations from 17.06.2023 to 22.06.2023. In the first leg of his tour, Shri Rawat, visited the Himalayan Forest Research Institute, Panthghati, Shimla and inaugurated the newly established Technology Demonstration Centre on 18th June, 2023. During this, in his address he said that dissemination of research results to the stakeholders is one of the main activities and if the benefits of research reach the stakeholders in the right way and at the right time, only then research becomes truly meaningful. He said that Technology Demonstration Centre, Shimla would prove to be important for creating forestry awareness about the new technologies developed. The center provides an opportunity to the stakeholders to witness the technologies developed. He hoped that various stakeholders would be benefited by the launch of the Technology Demonstration Centre. He emphasized on working for improving the livelihood of the rural people through forestry. During the program, the Director General released the various publications recently published by the Institute. He also released bio-products i.e. Him Albiwash (a liquid) and Him Biokill-1 (powder) bio-pesticides developed by the institute from native plant species *Pisumar* grass and these bio-pesticides are effective against pests of forestry plants. Apart from this, *Him Mrida Sanjeevani-1* Mycorrhiza Formulation – which is effective as a bio-fertilizer for increasing soil fertility was also released. The *Him Mrida Sanjeevani-1* product has also been registered by Directorate of Agriculture, Shimla, Himachal Pradesh. During his five days, Shri Rawat also visited the Institute's Field Research Station Tabo to review the research activities there. He was also the Chief Guest at the training program on ‘Nursery and Plantation Techniques of Juniper and Cultivation of Temperate Medicinal Plant’s at Kaza, Lahaul and Spiti organized by the Institute on 20.06.2023. During the training programme, he presented 10 Shukpa (*Juniperus polycarpos*) saplings to ADC, Kaza and SDM, Kaza and assured the local people that the HFRI will continue to distribute Shukpa saplings to the local people from time to time in future also. He hoped that after the training program, people would be able to grow Shukpa saplings themselves without any outside help, they would be able to plant Juniper saplings in their neighborhood. On 21st, June, 2023, he proceeded to Filed Research Station and VVK, Jagatsukh Manali, and also reviewed research and extension

activities there. He asked director, scientists and officers of the institute to carry out more activities at FRS and VVK. On 22nd June, DG, ICFRE started his journey back to ICFRE, Dehradun.

Glimpses of Visit of DG, ICFRE to ICFRE-HFRI Shimla and its FRS

शुक्पा
(Juniperus polycarpos K. Koch)
श्री अरुण सिंह रावत, भा.व.से.

NURSERY AND PLANTATION
TECHNIQUE
OF
JUNIPERUS POLYCARPOS C. KOCH

.

Media Coverage

नई खोज का लाभार्थियों तक पहुंचना आवश्यक

विशेष संवाददाता — शिमला

- हिमाचल पहुंचे भारतीय वानिकी अनुसंधान संस्थान देहरादून के महानिदेशक ने की चर्चा
- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में स्थापित प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र का किया उद्घाटन

भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद देहरादून के महानिदेशक अरुण सिंह रावत ने कहा कि प्रदेश में हो रही नई खोज का उसके लाभार्थियों तक पहुंचना आवश्यक है। जब तक अनुसंधान हितधारकों तक नहीं पहुंचेंगे, उसके सार्थक परिणाम सामने नहीं आएंगे। उन्होंने कहा कि नई तकनीकों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र शिमला महत्त्वपूर्ण साबित होगा। अरुण सिंह रावत इन दिनों हिमाचल के दौरे पर हैं। प्रथम चरण में उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान का दौरा किया। यहां उन्होंने नए स्थापित प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र का उद्घाटन किया। इस दौरान यह केंद्र हितधारकों को विकसित तकनीकों को देखने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र शुरू होने से विभिन्न हितधारकों को लाभ होगा। महानिदेशक ने पिस्सूमार घास से तैयार किए गए जैव-कीटनाशक हिम एल्बिवॉश और हिम बायोकिल पाउडर जो वानिकी पौधों में लगने वाले कीटों के प्रभावी तरल फॉर्मूलेशन है। इसके अतिरिक्त हिम मृदा संजीवनी-एक माइकोराइजा फोर्मूलेशन, जोकि मृदा की उर्वरकता बढ़ाने के लिए एक जैव-उर्वरक के रूप में प्रभावी है का भी विमोचन किया। उपरोक्त उत्पाद को हिमाचल प्रदेश कृषि विभाग ने प्रमाणित भी किया है। उन्होंने वानिकी के माध्यम से ग्रामीण लोगों की आजीविका में सुधार के लिए काम करने पर जोर दिया। संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने कहा कि संस्थान में आने वाले विभिन्न आगंतुकों जैसे कि शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, छात्रों को संस्थान ने विकसित प्रौद्योगिकियों के बारे में अवगत कराया जाएगा। रावत अपने पांच दिनों के दौरान वह अनुसंधान गतिविधियों का निरीक्षण करने के लिए संस्थान के फील्ड रिसर्च स्टेशन ताबो का भी दौरा करेंगे। वह 20 जून को काजा, लाहुल-स्पीति में जुनिपर की नर्सरी और पौधरोपण तकनीक और समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भी होंगे।

औषधीय पौधों के बताए लाभ

औषधीय पौधों की खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला करवाई

जिला संवाददाता-काजा

जुनिपर शुक्पा की नर्सरी तकनीक एवं सम शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला करवाई गई। इसमें बतौर के महानिदेशक एएस रावत मुख्यतिथि संस्थान उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि जुनिपर शुक्पा पौधे के औषधीय कीमत बहुत है। कई हिमालय के राज्यों में यह पौधा काफी विकसित हो रहा हैं। इससे जहां पर्यावरण भी सुरक्षित होता है वहीं लोगों को आय के साधन भी विकसित होती है। जुनिपर-पेंसिल सिडार उत्तर-पश्चिम हिमालयी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शंकुधारी वृक्ष है। भारत वर्ष में यह वृक्ष मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर, लाहुल, स्पीति जिले में और जम्मू-कश्मीर के गुरेज घाटी, लद्दाख क्षेत्र, उत्तराखंड के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। वहां की स्थानीय भाषा में इसे शूर, शुक्पा, शुर्गु, लाशूक एवं धूप नाम से जाना जाता है। विशिष्ठ अतिथि एडीसी राहुल जैन ने कहा कि स्पीति में इस पौधे से कई लोगों को फायदा हो सकता है। घर में ही लोगों को आय होगी और यहां की आर्थिकी मजबूत होंगी। निदेशक संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने बताया कि ताबो में जूनिपर की नर्सरी एवं पौधरोपण तकनीक विकसित करने में सफलता पाई है और कहा कि पहले इसकी नर्सरी और पौधरोपण नहीं थी। जिससे कारण वन विभाग पौधरोपण के लिए इसके पौधे तैयार नहीं कर पा रहा था, परंतु संस्थान द्वारा विकसित नर्सरी तकनीक से इसके पौधरोपण के द्वार खुल गए हैं।

जुनिपर पौधे से आर्थिकी स्थिति होगी मजबूत

केलांग/रोहतांग (लाहौल-स्पीति)। औषधीय पौधा जुनिपर (शुक्पा) हिमालय क्षेत्रों में विकसित हो रहा है। इसके दाम अच्छे मिलते हैं। यह लोगों की आर्थिकी को मजबूत करेगा।

यह बात भारतीय वानिकी अनुसंधान के महानिदेशक एएस रावत ने मंगलवार को कही। शीत मरुस्थल काजा में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान से जुनिपर की नर्सरी, तकनीक एवं महत्वपूर्ण सम शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की।

इसमें बतौर मुख्यातिथि संस्थान के महानिदेशक एएस रावत ने शिरकत की।उन्होंने कहा कि जुनिपर उत्तर-पश्चिम हिमालयी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शंकुधारी वृक्ष है। भारत में यह वृक्ष मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के जिला किन्नौर एवं लाहौल-स्पीति, जम्मू-कश्मीर की गुरेज घाटी, लद्दाख तथा उत्तराखंड के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। एडीसी राहुल जैन ने कहा कि स्पीति में इस पौधे से कई लोगों को फायदा हो सकता है। घरद्वार पर ही लोगों को आय का साधन मिलेगा। संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने कहा कि ताबो में जुनिपर की नर्सरी एवं पौधरोपण तकनीक विकसित करने में सफलता पाई है। संवाद

हिमालय राज्यों में आय के साधन विकसित कर रहा जुनिपर शुक्पा, औषधीय गुण भी हैं मौजूद

Divya Himachal TV
155K subscribers
Subscribe
0 Share Save

काजा में औषधीय पौधों की खेती पर कार्यशाला

काजा में आयोजित कार्यशाला के दौरान उपस्थित लोग।

हिमाचल दस्तक ब्यूरो ■ काजा

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान से काजा में जुनिपर शुक्पा की नर्सरी तकनीक एवं महत्वपूर्ण सम शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें बतौर मुख्यअतिथि संस्थान के महानिदेशक एएस रावत रहे।

उन्होंने कहा कि जुनिपर शुक्पा पौधे के औषधीय कीमत बहुत है। कई हिमालय के राज्यों में यह पौधा काफी विकसित हो रहा हैं। इससे जहां पर्यावरण भी सुरक्षित होता है वहीं लोगों की आय के साधन भी विकसित होते है। जुनिपर (पेंसिल सिडार) उत्तर-

■ भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने किया आयोजन

पश्चिम हिमालयी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शंकुधारी वृक्ष है। भारत वर्ष में यह वृक्ष मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर एवं लाहौल और स्पीति जिले में और जम्मू-कश्मीर के गुरेज घाटी और लद्दाख क्षेत्र तथा उत्तराखंड के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। वहां की स्थानीय भाषा में इसे शूर, शुक्पा, शुर्गु, लाशुक एवं धूप नाम से जाना जाता है। एडीसी राहुल जैन ने कहा कि स्पीति में इस पौधे से कई लोगों को फायदा हो सकता है। संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि ताबो में जूनिपर की नर्सरी एवं पौधरोपण तकनीक विकसित करने में सफलता पाई है।